नव भारत, भोपाल 15 JAN 2010

विशेष

हॉकी का खर्च म.प्र. उठायेगा

देश के राष्ट्रीय खेल होने के बावजूद भी जितनी विडंबना हॉकी के खिलाड़ियों को देखनी पड़ती हैं उतनी अन्य किसी को नहीं. हॉकी की दिनों-दिन बढ़ती दुर्दशा से आहत होकर वालीवुड ने यशराज बैनर तले सीमित अमीन के निर्देशन में और शाहरूख खान के माध्यम से 'चक दे इंडिया' बनाकर हॉकी खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाना चाहा था, लेकिन करोड़ों रुपये फूंक देने के बाद फिल्म तो सफल हो गई, खिलाड़ियों की स्थिति में किसी प्रकार का सुधार नहीं हुआ. बावजूद इसके मध्य प्रदेश के युवा मुख्यमंत्री ने हॉकी खिलाड़ियों को गोद लेने की घोषणा करके अपने खेल प्रेमी होने का परिचय तो दिया ही साथ ही उनकी इस घोषणा ने न सिर्फ राष्ट्रीय खेल में जान फूंकने का काम किया बल्कि प्रदेश को एक बार फिर से नई पहचान भी दिला दी. हालांकि व्यवसायिक दृष्टि से हॉकी फायदेमंद नहीं है यह कल्पना बोर्ड की है जबकि प्रदेश के मुख्यमंत्री ने एक बड़ी घोषणा करके यह साबित कर दिया कि खेल को व्यवसाय से नहीं जोड़ना चाहिये. शिवराज की एक घोषणा ने पूरे देश का ध्यान मध्य प्रदेश की ओर खींचा है और यह विचार करने पर भी मजबूर कर दिया कि खेल प्रतिभाओं को व्यवसायिक मानसिकता और राजनैतिक पैतरेबाजी से दूर ही रखा जाना चहिये. मध्य प्रदेश को शुरू से ही हॉकी की नर्सरी कहा जाता है. जाने-माने खिलाड़ी असलम शेर खां भी भोपाल के ही हैं.

एक ओर जब हॉकी खिलाड़ियों को बोर्ड प्रेक्टिस पर आने के लिये मजबूर कर तथा दबाव डाल रहा था ऐसे में मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने पूरा खर्च तथा आयोजन की जिम्मेदारी लेकर एक ऐतिहासिक कदम उठाया है. प्रदेश के संवेदनशील मुख्यमंत्री होने का परिचय तो दिया ही है साथ ही साथ मध्य प्रदेश के कोने-कोने में पल रही युवा प्रतिभाओं का भी मनोबल बढ़ाया है. शिवराज जी के इस कदम की न सिर्फ सराहना होनी चाहिये बल्कि स्वागत भी करैंना चाहिये. रणनीति की आड़ में आई हॉकी की विसंगतियों को अब मिल बैठकर दूर कर लिया जायेगा यह उम्मीद सर्वत्र हो रही है. खेल के निर्णायक मंडल, संचालक मंडल को इससे सबक भी लेना चाहिये कि खेल को राजनीति से दूर ही रखा जाये तो अच्छा है.

– निलय श्रीवास्तव